परिसर प्रतिध्वनि

(नवोन्मेष, युवा ऊर्जा एवं अन्तःक्रिया का अभिव्यक्ति मंच)

मासिक भित्ति पत्रिका, अंक - 18, जून 2026

प्रधान संरक्षक	-	श्रीमती मीनाक्षी सुराना
प्रमुख संरक्षक	-	डॉ. प्रेम सुराना
मुख्य संरक्षक	-	डॉ. अंशु सुराना
प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर)	-	प्रो. (डॉ.) रश्मि जै
प्रधान संपादक	-	प्रो. (डॉ.) अंकित गांधी
संपादक	-	डॉ. प्रेम कुमार
सह-संपादक	-	डॉ. मोनिका शर्मा
खेल संपादक	-	श्री यश यादव

प्रेसिडेंट(वाइस चांसलर) का संदेश ...

प्रिय विश्वविद्यालय परिवार, विश्वविद्यालय की मासिक भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' के अंक 18 को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह अंक न केवल विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, सांस्कृतिक, शोध एवं नवाचार संबंधी गतिविधियों का सजीव दस्तावेज़ है, बल्कि शैक्षणिक सत्र 2025–26 की सफल एवं गरिमामयी पूर्णता का भी प्रतीक है। समाप्त हुआ यह शैक्षणिक सत्र अनेक उपलब्धियों, नवाचारों, शोधपरक गतिविधियों, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, सांस्कृतिक आयोजनों तथा विद्यार्थियों की उल्लेखनीय सफलताओं का साक्षी रहा है। इस अवधि में हमारे विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने समर्पण, अनुशासन और उत्कृष्ट कार्य-संस्कृति का परिचय देते हुए विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह हम सभी के लिए गर्व का विषय है कि सामूहिक प्रयासों, सकारात्मक दृष्टिकोण और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता ने विश्वविद्यालय की प्रगति को निरंतर गति प्रदान की है। किसी भी शैक्षणिक सत्र का समापन केवल एक यात्रा का अंत नहीं होता, बल्कि नए अवसरों, नई संभावनाओं और नए संकल्पों की शुरुआत भी होता है। सत्र 2025–26 से प्राप्त अनुभव, उपलब्धियाँ और सीख हमें आने वाले समय में और अधिक उत्कृष्ट कार्य करने के लिए प्रेरित करेंगी। मुझे विश्वास है कि आगामी सत्र में भी हमारा विश्वविद्यालय शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार, कौशल विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्रों में नई उपलब्धियाँ अर्जित करेगा। **'परिसर प्रतिध्वनि'** केवल एक भित्ति पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे विश्वविद्यालय की जीवंत अकादमिक संस्कृति, सृजनात्मक अभिव्यक्ति और सामूहिक चेतना का सशक्त माध्यम है। यह विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं विभिन्न विभागों के बीच संवाद, सहयोग और रचनात्मक सहभागिता को निरंतर प्रोत्साहित करती है तथा विश्वविद्यालय की उपलब्धियों को एक साझा मंच पर प्रस्तुत करती है। मैं इस अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल, विभागाध्यक्षों, संकाय सदस्यों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों तथा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी साथियों को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद देती हूँ। सप्रेम शुभकामनाओं सहित...

प्रो. (डॉ.) रश्मि जैन
प्रेसिडेंट (वाइस चांसलर)
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

कुलसचिव महोदय की कलम से...

विश्वविद्यालय की मासिक भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' के अंक 18 के प्रकाशन पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। यह अंक शैक्षणिक सत्र 2025–26 की सफल पूर्णता के साथ-साथ विश्वविद्यालय की विविध शैक्षणिक, सांस्कृतिक, शोध एवं नवाचार संबंधी गतिविधियों का सार्थक प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है। बीता हुआ सत्र हम सभी के लिए उपलब्धियों, अनुभवों और सामूहिक प्रयासों का साक्षी रहा है। विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों के समर्पण और सक्रिय सहभागिता ने विश्वविद्यालय की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 'परिसर प्रतिध्वनि' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि विश्वविद्यालय की सृजनात्मक अभिव्यक्ति, संवाद और अकादमिक संस्कृति का सशक्त माध्यम है। यह हमारे विभागों, शिक्षकों और विद्यार्थियों की उपलब्धियों को साझा करते हुए उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रेरणा प्रदान करती है। मैं इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल, सभी विभागाध्यक्षों, संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों तथा सहयोगी कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद देता हूँ। मुझे विश्वास है कि आगामी शैक्षणिक सत्र में भी हम सभी नए उत्साह, सकारात्मक सोच और उत्कृष्ट कार्य संस्कृति के साथ विश्वविद्यालय को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे। आप सभी के उज्ज्वल भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं सतत सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। सादर...

डॉ. अनूप शर्मा
कुलसचिव
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

संपादकीय...

प्रिय पाठकों, सप्रेम नमस्कार

विश्वविद्यालय की मासिक भित्ति पत्रिका 'परिसर प्रतिध्वनि' के अंक 18 को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। प्रत्येक अंक अपने समय की गतिविधियों, उपलब्धियों और अनुभवों को संजोकर विश्वविद्यालय की जीवंत अकादमिक संस्कृति का दस्तावेज़ बनता है। यह अंक भी उसी परंपरा का एक सार्थक विस्तार है, किंतु इसकी विशेषता यह है कि यह शैक्षणिक सत्र 2025–26 की सफल पूर्णता का साक्षी है। इसलिए यह केवल एक मासिक प्रकाशन नहीं, बल्कि पूरे सत्र की उपलब्धियों, अनुभवों, चुनौतियों और सामूहिक प्रयासों का प्रतिबिंब भी है। किसी भी विश्वविद्यालय की पहचान केवल उसकी इमारतों या अधोसंरचना से नहीं होती, बल्कि वहाँ के शिक्षकों, विद्यार्थियों, शोधार्थियों और कर्मचारियों के सतत प्रयासों, शैक्षणिक वातावरण और रचनात्मक सोच से निर्मित होती है। बीते शैक्षणिक सत्र में हमारे विश्वविद्यालय ने शिक्षा, अनुसंधान, नवाचार, सांस्कृतिक गतिविधियों, सामाजिक सहभागिता और व्यक्तित्व विकास के विविध आयामों में उल्लेखनीय प्रगति की है। विभिन्न विभागों द्वारा आयोजित राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ, विशेषज्ञ व्याख्यान, शोधपरक परिचर्चाएँ, प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा विद्यार्थी-केंद्रित गतिविधियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि हमारा विश्वविद्यालय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और ज्ञान-सृजन के प्रति निरंतर प्रतिबद्ध है।

सत्र 2025–26 अनेक नई उपलब्धियों और प्रेरणादायक अनुभवों के साथ संपन्न हुआ। विद्यार्थियों ने शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ-साथ खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, साहित्यिक गतिविधियों और सामाजिक उत्तरदायित्व से जुड़े अभियानों में भी सक्रिय भागीदारी निभाई। हमारे शिक्षकों ने शोध, नवाचार और मार्गदर्शन के माध्यम से ज्ञान की नई दिशाओं को विकसित किया, जबकि विश्वविद्यालय के प्रशासनिक एवं तकनीकी कर्मचारियों ने अपनी कार्यनिष्ठा से संस्थान की प्रगति को गति प्रदान की। इन सभी के संयुक्त प्रयासों ने विश्वविद्यालय के विकास को नई ऊर्जा प्रदान की है। आज उच्च शिक्षा केवल ज्ञान अर्जित करने का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि यह नवाचार, कौशल, नेतृत्व क्षमता, नैतिक मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास का भी सशक्त आधार बन चुकी है। एक शैक्षणिक सत्र की पूर्णता हमें आत्ममंथन का अवसर भी देती है। यह समय अपनी उपलब्धियों का मूल्यांकन करने, कमियों से सीखने और भविष्य के लिए नए संकल्प निर्धारित करने का है। हमें विश्वास है कि सत्र 2025-26 से प्राप्त अनुभव आने वाले शैक्षणिक सत्र में और अधिक उत्कृष्ट कार्य करने की प्रेरणा देंगे। नई ऊर्जा, नवीन विचारों और सामूहिक सहभागिता के साथ हमारा विश्वविद्यालय शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेगा। इस अंक के प्रकाशन में सहयोग प्रदान करने वाले विश्वविद्यालय प्रशासन, माननीय कुलपति महोदया, कुलसचिव महोदय, सभी विभागाध्यक्षों, संकाय सदस्यों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों तथा संपादकीय मंडल के प्रत्येक सदस्य के प्रति हम अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। विशेष रूप से उन सभी रचनाकारों का धन्यवाद, जिनकी सहभागिता ने इस पत्रिका को अधिक समृद्ध, सारगर्भित और प्रेरणादायी बनाया। हमें विश्वास है कि 'परिसर प्रतिध्वनि' का यह अंक आपको न केवल विश्वविद्यालय की गतिविधियों से परिचित कराएगा, बल्कि ज्ञान, सृजनशीलता और सकारात्मक चिंतन के प्रति आपकी प्रतिबद्धता को भी सुदृढ़ करेगा। आइए, सत्र 2025-26 की उपलब्धियों को प्रेरणा बनाकर हम नए शैक्षणिक सत्र का स्वागत उत्साह, नवाचार और उत्कृष्टता के संकल्प के साथ करें तथा अपने विश्वविद्यालय को अकादमिक गुणवत्ता, अनुसंधान और सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में नई पहचान दिलाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहें। आप सभी के स्नेह, सहयोग और रचनात्मक सहभागिता की अपेक्षा के साथ।

डॉ. प्रेम कुमार
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

नोट: आप सभी से विनम्र निवेदन है कि अपने बहुमूल्य सुझाव और प्रतिक्रियाएँ अवश्य प्रेषित करें, जिससे आगामी अंकों को और अधिक समृद्ध एवं उपयोगी बनाया जा सके।

A Farewell Ceremony was successfully organized by the Department of Special Education

21st May 2026, the D.Ed. First Year students in honour of the D.Ed. Second Year students. The program included various cultural activities such as dance performances, modelling, and games, which created a joyful and memorable atmosphere. Different awards and titles were also presented to students for their achievements and participation. The ceremony aimed to strengthen the bond among students, encourage confidence and participation, and motivate the outgoing students for their bright future. A "Farewell Ceremony" was successfully organized by the Department of Special Education at the University of Technology by the D.Ed. First Year students in honor of the D.Ed. Second Year students. The program was conducted under the guidance of Dr. Vandana Singh Thakur, Dean, Department of Special Education. The program commenced with the ceremonial lamp lighting. On this occasion, Dr. Vandana Singh Thakur, Dean of the Department of Special Education, Dr. Rohit Saraswat, Dean Research, Mr. Pankaj Kumar Verma, Deputy Registrar (HR & Finance), and Dr. Sitaram Mali, HOD of the School of Humanities, Arts and Social Sciences, were present.

The program aimed to provide a memorable farewell to the outgoing students and strengthen the bond among students through cultural activities, games, and award ceremonies. Various cultural performances such as dance, modeling, and entertaining games created a joyful and enthusiastic atmosphere. All the students actively participated and enjoyed the event. During the farewell

ceremony, Vikas Prajapat was selected as Mister Farewell and Radhika Solanki was selected as Miss Farewell among the D.Ed. Second Year students. A certificate and prize distribution ceremony was also organized, and the announcements were made by Assistant Professor Mrs. Seema Chaudhary. Several students were honored with special awards during the event. The "Student of the Year" award was presented to Alka Yadav, Meenu Meena, Sonia Jangid, Lokesh Bairwa, and Deepika Raigar for their outstanding performance and contribution. The "Golden Heart Award" was presented to Shokin Gurjar for his hard work, social contribution, and for providing free education to underprivileged students.

The award was presented by President Dr. Rashmi Jain and Dr. Vandana Singh Thakur. At the conclusion of the program, Dr. Vandana Singh Thakur blessed the students and wished them success in their future endeavors. Refreshments were also arranged for all the students present at the event. The program was coordinated by Dr. Vandana Singh Thakur, with co-coordination by Assistant Professor Mrs. Seema Chaudhary. The contribution of all faculty members of the Department of Special Education Mr. Raghvendra Yadav, Mr. Hasan Deen Khan, Ms. Geeta Rani, Mr. Dhiraj Kumar Nagar, Ms. Bhawna Rawat, and Mr. Manish Kumar Meena was highly commendable. In the end, Dr. Vandana Singh Thakur expressed gratitude to all guests, teachers, and students. The program concluded with emotional farewell moments and best wishes for the bright future of the outgoing students.

विश्वविद्यालय को मिला ईसी-काउंसिल एकेडेमिया पार्टनर

दिनांक 03 जून 2026 को साइबर सुरक्षा शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर को प्रतिष्ठित ईसी-काउंसिल (EC-Council) एकेडेमिया पार्टनर प्रोग्राम में शामिल किया गया है। इस साझेदारी के माध्यम से विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों और शिक्षकों को विश्वस्तरीय साइबर सुरक्षा शिक्षा, प्रशिक्षण तथा अंतरराष्ट्रीय प्रमाणन के अवसर प्रदान करेगा। ईसी-काउंसिल विश्व की अग्रणी साइबर सुरक्षा प्रमाणन संस्थाओं में से एक है। इसके एकेडेमिया पार्टनर बनने के बाद विश्वविद्यालय को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त साइबर सुरक्षा पाठ्यक्रम, उन्नत शिक्षण संसाधन, पाठ्यक्रम सहयोग, फैकल्टी विकास कार्यक्रम तथा आधुनिक प्रयोगशाला सुविधाओं का लाभ मिलेगा। इस सहयोग से विद्यार्थियों को उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप व्यावहारिक साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण प्राप्त होगा। साथ ही वे साइबर रेंज एक्सरसाइज, स्किल चैलेंज, अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं तथा साइबर सुरक्षा क्षेत्र की नवीनतम तकनीकों से परिचित हो सकेंगे। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को ईसी-काउंसिल के वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त प्रमाणपत्र प्राप्त करने का अवसर भी मिलेगा, जिससे उनके रोजगार एवं करियर की संभावनाएँ और अधिक मजबूत होंगी।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रो-चांसलर डॉ. अंशु सुराना ने कहा कि- "वर्तमान डिजिटल युग में साइबर सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण और तेजी से विकसित होने वाले क्षेत्रों में से एक है। ईसी-काउंसिल के साथ यह साझेदारी विश्वविद्यालय की उस प्रतिबद्धता को दर्शाती है जिसके तहत विद्यार्थियों को वैश्विक मानकों के अनुरूप, उद्योगोन्मुखी और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा प्रदान की जा रही है।" उन्होंने कहा कि यह सहयोग विद्यार्थियों के लिए सीखने, अंतरराष्ट्रीय प्रमाणन प्राप्त करने और व्यावसायिक विकास के नए द्वार खोलेगा। विश्वविद्यालय प्रशासन के अनुसार इस साझेदारी के माध्यम से तकनीकी एवं कंप्यूटर शिक्षा कार्यक्रमों को और अधिक सशक्त बनाया जाएगा तथा पाठ्यक्रम में व्यावहारिक साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण और अंतरराष्ट्रीय स्तर के शैक्षणिक संसाधनों को शामिल किया जाएगा। विश्वविद्यालय का लक्ष्य इस सहयोग के माध्यम से एक मजबूत साइबर सुरक्षा पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना है, जिससे विद्यार्थियों, शिक्षकों, शोधकर्ताओं तथा उद्योग जगत को समान रूप से लाभ प्राप्त हो सके। यह उपलब्धि विश्वविद्यालय को साइबर सुरक्षा शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दिलाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगी।

World Environment Day 2026 was successfully organized

World Environment Day 2026 was celebrated in the University of Technology by School of Agriculture on June 5, 2026, under the official theme "Climate Action: Inspired by Nature. For Climate. For Our Future." Managed globally by the United Nations Environment Programme (UNEP) from the host city of Baku, Rebublic country Azerbaijan, the 2026 campaign integrated strict policy changes with grassroots implementation. A major focal point of this year's regional events was the analysis of pollution reasons and the execution of structural technological and community controls. The programme was address the single greatest threat to our ecological survival: the crisis of global pollution. Look around us. The reasons behind the degradation of our planet are clear, human-made, and systemic. First, we are drowning in plastic. Every year, millions of tonnes of single-use polymers block our drainage systems, choke our rivers, and break down into toxic microplastics that enter our food chain and our bodies. Second, our air quality continues to decline. The burning of fossil fuels for electricity, industrial expansion, and vehicular traffic pumps billions of tonnes of greenhouse gases into the atmosphere, causing the severe, record-breaking heatwaves we are experiencing today.

Third, agricultural malpractices, such as mass biomass burning and the excessive use of chemical fertilizers, are systematically stripping our soil of life and poisoning our groundwater. Awareness alone will no longer save us. We must enforce strict, uncompromising controls. Control begins with a transition to a circular economy. Industries must embrace advanced mechanical recycling, designing products that never turn into permanent waste. On a local level, governments must rigidly enforce bans on single-use plastics and penalize open waste dumping. We must rapidly expand high-efficiency solar modules and wind infrastructure to replace coal-powered energy grids. Finally, as individuals, we must control our consumer

habits-segregating waste at its source, conserving water, and shifting away from a culture of disposable convenience. Let us use World Environment Day 2026 as the precise boundary where our habits change. Let us deploy technology, policy, and personal willpower to actively clean our skies and water. This programme emphasized on Pollution & their Control viz;

Part A: Primary Reasons for Pollution

Unregulated Plastic Polymer Disposal: Widespread retail reliance on non-biodegradable, single-use materials that bypass weak municipal sorting systems. Fossil Fuel Combustion: Rising numbers of combustion-engine vehicles and reliance on coal-heavy power grids. Open Biomass & Municipal Burning: The practice of burning garbage and crop residues, releasing hazardous particulate matter

2. Part B: Actionable Controls

Community-Led Source Segregation: Launch a strict "Three-Bin System" (Bio-degradable, Recyclable Polymers, and Hazardous Waste) within your facility, penalizing mixed-waste disposal

Mechanical Recycling Frameworks: Partner with local clean-tech waste processors to ensure that all discarded plastic from the program is compressed, pelletized, and fed directly back into industrial supply chains. **Green Transit & Energy Audits:** Organize a corporate or school-wide carpooling network and install energy-efficient LED fixtures alongside micro-solar panels to reduce reliance on the local grid. **"Adopt-a-Spot" Clean-up & Afforestation:** Identify a polluted local area, clear it of non-biodegradable debris, and plant native, air-purifying trees to act as a natural carbon and dust filter.

फीडिंग हैंड्स एनजीओ के सहयोग से आंगनबाड़ी केन्द्रों को शैक्षणिक खिलौना किटों का वितरण

दिनांक 15 जून 2026 को यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर ने फीडिंग हैंड्स एनजीओ के सहयोग से विश्वविद्यालय परिसर में आंगनबाड़ी केन्द्रों के लिए शैक्षणिक खिलौना किट वितरण कार्यक्रम आयोजित किया। इस पहल का उद्देश्य खेल-आधारित शिक्षा को बढ़ावा देना तथा छोटे बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक संसाधन उपलब्ध कराना था, जिससे उनके प्रारंभिक शिक्षा स्तर को सुदृढ़ किया जा सके। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए गांवों तुतोली, फतेहपुरा, कुम्हारियावास, वाटिका, बाजदोली, टेटारिया सहित आसपास के कई गांवों के आंगनबाड़ी केन्द्रों को लाभान्वित किया गया। प्रत्येक आंगनबाड़ी केन्द्र को 20 सेट शैक्षणिक खिलौनों से युक्त एक विशेष खिलौना किट प्रदान की गई, जो बच्चों के बौद्धिक विकास, रचनात्मक सोच तथा खेल-खेल में सीखने की क्षमता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से तैयार की गई थी। यह वितरण कार्यक्रम यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी जयपुर परिसर में आयोजित किया गया, जहां विभिन्न गांवों से आई आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने केन्द्रों की ओर से शैक्षणिक खिलौना किट प्राप्त की। इस पहल का उद्देश्य आंगनबाड़ी केन्द्रों में बच्चों के लिए बेहतर शिक्षण वातावरण तैयार करना तथा गतिविधि-आधारित शिक्षा को प्रोत्साहित करना है।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ. रश्मि जैन, अध्यक्ष, यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी जयपुर रहीं। डॉ. रश्मि जैन ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के समर्पण की सराहना करते हुए कहा कि बच्चों के प्रारंभिक शिक्षा चरण में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि शैक्षणिक खिलौने बच्चों में रचनात्मकता, जिज्ञासा तथा समग्र विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस अवसर पर डॉ. अंशु सुराना, प्रो-चांसलर, यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी जयपुर ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि बच्चों के समग्र विकास में खेल-आधारित शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने फीडिंग हैंड्स एनजीओ एवं विश्वविद्यालय की इस पहल को सामाजिक उत्तरदायित्व का उत्कृष्ट उदाहरण बताते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को बेहतर शिक्षण अवसर प्रदान करने में सहायक सिद्ध होते हैं। साथ ही उन्होंने भविष्य में भी शिक्षा एवं सामुदायिक विकास से जुड़े ऐसे जनहितकारी कार्यक्रमों को निरंतर जारी रखने की आवश्यकता पर बल दिया। इस अवसर पर उपस्थित आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं एवं ग्रामीण प्रतिनिधियों ने यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी जयपुर और फीडिंग हैंड्स एनजीओ का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इन शैक्षणिक संसाधनों से ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को अत्यधिक लाभ मिलेगा। फीडिंग हैंड्स एनजीओ पिछले कई वर्षों से विश्वविद्यालय के साथ मिलकर सामाजिक कल्याण एवं सामुदायिक विकास से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन कर रहा है। कार्यक्रम के दौरान दोनों संस्थाओं ने भविष्य में भी ग्रामीण समुदायों के शैक्षिक एवं सामाजिक विकास के लिए इसी प्रकार की जनहितकारी पहलें जारी रखने का संकल्प व्यक्त किया।

वार्षिक परीक्षाओं का सफलतापूर्वक हुआ आयोजन

यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर में शैक्षणिक सत्र 2025–26 की वार्षिक परीक्षाओं का सफलतापूर्वक एवं सुव्यवस्थित आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय प्रशासन के कुशल निर्देशन, परीक्षा विभाग की प्रभावी कार्ययोजना तथा संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों के समन्वित प्रयासों से संपूर्ण परीक्षा प्रक्रिया शांतिपूर्ण, पारदर्शी और अनुशासित वातावरण में संपन्न हुई। विश्वविद्यालय में आयोजित इन वार्षिक परीक्षाओं में स्नातक, स्नातकोत्तर, डिप्लोमा एवं विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। परीक्षा प्रारंभ होने से पूर्व सभी आवश्यक तैयारियाँ समयबद्ध रूप से पूर्ण कर ली गई थीं। परीक्षा केंद्रों पर विद्यार्थियों के लिए पर्याप्त बैठने की व्यवस्था, स्वच्छ एवं शांत वातावरण, पेयजल, विद्युत, सुरक्षा तथा अन्य आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराई गईं, जिससे परीक्षार्थियों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना नहीं करना पड़ा। परीक्षाओं की निष्पक्षता एवं पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा सभी आवश्यक दिशा-निर्देशों का कठोरता से पालन किया गया। परीक्षा केंद्रों पर प्रशिक्षित पर्यवेक्षकों एवं उड़नदस्तों की नियमित निगरानी रही, जिससे संपूर्ण परीक्षा प्रक्रिया पूर्णतः अनुशासित एवं नकल-मुक्त वातावरण में संपन्न हुई। परीक्षा संबंधी गोपनीयता, प्रश्नपत्रों के सुरक्षित वितरण तथा उत्तरपुस्तिकाओं के व्यवस्थित संकलन की प्रक्रिया भी निर्धारित मानकों के अनुरूप संपन्न की गई।

विश्वविद्यालय की प्रेसिडेंट प्रोफ़ेसर (डॉ.) रश्मि जैन, प्रो-प्रेसिडेंट डॉ. अंकित गांधी, कुलसचिव डॉ. अनूप शर्मा एवं परीक्षा नियंत्रक डॉ. कमल किशोर जांगीड़ ने समय-समय पर परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। उन्होंने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें सकारात्मक वातावरण में परीक्षा देने के लिए प्रेरित किया। विश्वविद्यालय प्रशासन ने यह सुनिश्चित किया कि प्रत्येक परीक्षार्थी को निष्पक्ष, सुरक्षित एवं अनुकूल परीक्षा वातावरण उपलब्ध हो। परीक्षाओं के सफल संचालन में विश्वविद्यालय के सभी संकाय सदस्यों, विभागाध्यक्षों, परीक्षा विभाग, प्रशासनिक अधिकारियों, तकनीकी एवं गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। सभी ने अपने दायित्वों का निर्वहन पूर्ण निष्ठा, समर्पण एवं जिम्मेदारी के साथ किया, जिसके परिणामस्वरूप संपूर्ण परीक्षा प्रक्रिया बिना किसी व्यवधान के सफलतापूर्वक संपन्न हुई। वार्षिक

परीक्षाओं के समापन के साथ ही उत्तरपुस्तिकाओं के मूल्यांकन एवं परिणाम तैयार करने की प्रक्रिया भी निर्धारित समय-सीमा के अनुसार प्रारंभ कर दी गई है। विश्वविद्यालय का प्रयास है कि परिणाम समय पर घोषित किए जाएँ, जिससे विद्यार्थियों को आगामी शैक्षणिक एवं व्यावसायिक गतिविधियों में किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े। यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर सदैव गुणवत्तापूर्ण एवं पारदर्शी परीक्षा प्रणाली के प्रति प्रतिबद्ध रहा है। वार्षिक परीक्षाओं का सफल आयोजन विश्वविद्यालय की सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था, अनुशासित कार्यसंस्कृति तथा शैक्षणिक उत्कृष्टता के प्रति उसकी प्रतिबद्धता का सशक्त प्रमाण है। विश्वविद्यालय भविष्य में भी इसी प्रकार निष्पक्ष, विश्वसनीय एवं छात्र-केंद्रित परीक्षा प्रणाली के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा के अपने उद्देश्य को निरंतर आगे बढ़ाता रहेगा।

रिश्तों की गर्माहट

शाम का समय था। शहर के एक व्यस्त अस्पताल के बाहर एक वृद्ध व्यक्ति बेंच पर चुपचाप बैठा था। चेहरे पर चिंता की गहरी रेखाएँ थीं और हाथ बार-बार जेब में रखी पुरानी घड़ी को टटोल रहे थे। उनकी पत्नी पिछले दो दिनों से अस्पताल में भर्ती थीं। डॉक्टर ने दवाइयों की एक लंबी सूची थमा दी थी, लेकिन जेब में मौजूद थोड़े-से पैसे उन दवाइयों के लिए पर्याप्त नहीं थे। वृद्ध ने कई बार अपने मोबाइल की ओर देखा। बेटे का नंबर स्क्रीन पर चमकता, फिर वे बिना कॉल किए मोबाइल वापस जेब में रख लेते। बेटा विदेश में एक बड़ी कंपनी में कार्यरत था। महीनों से केवल औपचारिक बातचीत होती थी। वे उसे परेशान नहीं करना चाहते थे। इतने में अस्पताल का एक सफाई कर्मचारी वहाँ आया। उसने वृद्ध को कई घंटों से उसी जगह बैठे देखा था। धीरे से बोला- "बाबूजी, सुबह से आपको देख रहा हूँ। सब ठीक तो है?" वृद्ध ने पहले मुस्कुराने की कोशिश की, लेकिन आँखें भर आईं। उन्होंने धीरे-धीरे सारी बात बता दी। सफाई कर्मचारी कुछ देर चुप रहा। फिर बोला, "आप यहीं बैठिए।"

करीब आधे घंटे बाद वह वापस लौटा। उसके हाथ में दवाइयों का पैकेट था। वृद्ध चौंक गए। "बेटा, ये...?" "दवाइयाँ हैं। अभी सबसे ज़रूरी यही था।" "लेकिन पैसे?" वह मुस्कुरा दिया, "अभी मेरी तनख़्वाह आई है। जब सुविधा हो, तब लौटा दीजिएगा... और अगर न भी लौटा पाएँ, तो समझूँगा कि मैंने अपने माता-पिता की सेवा की है।" वृद्ध की आँखों से आँसू बह निकले। उन्होंने काँपते हाथों से उसका हाथ पकड़ लिया। उसी समय पास खड़ी एक नर्स यह दृश्य देख रही थी। उसने कहा, "बाबूजी, यह पहली बार नहीं है। अस्पताल में जब भी किसी असहाय मरीज या परिजन को मदद की ज़रूरत होती है, यह सबसे पहले आगे आता है।" वृद्ध ने भर्राए स्वर में पूछा, "बेटा, तुम्हारे अपने माता-पिता कहाँ हैं?" उसने कुछ पल आसमान की ओर देखा और बोला, "गाँव में रहते थे। दोनों अब इस दुनिया में नहीं हैं। उनके जाने के बाद समझ आया कि माँ-बाप का स्थान कोई नहीं ले सकता। इसलिए जहाँ भी किसी बुज़ुर्ग को देखता हूँ, लगता है जैसे वे ही सामने खड़े हों।" वृद्ध ने उसे गले लगा लिया। उस क्षण दोनों के बीच कोई रक्त संबंध नहीं था, फिर भी अपनापन किसी सगे रिश्ते से कम नहीं था।

कुछ दिनों बाद वृद्ध की पत्नी स्वस्थ होकर घर लौट आईं। विदा लेते समय वृद्ध ने दवाइयों के पैसे लौटाने चाहे, पर कर्मचारी ने विनम्रता से मना कर दिया। उसने कहा, "यदि मेरा धन्यवाद करना ही है, तो किसी दिन किसी ज़रूरतमंद की मदद कर दीजिएगा। रिश्ते खून से ही नहीं, संवेदनाओं से भी बनते हैं।" वृद्ध मुस्कुराए। उस दिन उन्हें यह एहसास हुआ कि दुनिया में इंसानियत अभी भी जीवित है। कभी-कभी एक अनजान व्यक्ति वह अपनापन दे जाता है, जिसकी उम्मीद अपने भी नहीं दे पाते।

डॉ. प्रेम कुमार
सह-आचार्य, हिंदी विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर

पर्यावरण संरक्षण : जिम्मेदारी किसकी?

आज मनुष्य का जीवन पहले की अपेक्षा अधिक कठिन होता जा रहा है। न तो हमें पूरी तरह शुद्ध भोजन मिल पा रहा है, न ही शुद्ध वातावरण। जीवन के हर क्षेत्र में किसी न किसी रूप में मिलावट दिखाई देती है। ऐसे में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि आखिर इसके लिए जिम्मेदार कौन है? आज अत्यधिक गर्मी, बढ़ता प्रदूषण और बिजली की कटौती जैसी समस्याओं का सामना हम सभी कर रहे हैं। जब रात में सुकून से आराम करना भी मुश्किल हो जाता है, तो हमारा आक्रोश अक्सर सरकार की ओर चला जाता है। सरकार की भूमिका और जिम्मेदारी निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है, लेकिन क्या केवल सरकार को दोष देना उचित है? यह प्रश्न हमें स्वयं से भी पूछना होगा। आज प्रदूषण कई रूपों में हमारे जीवन को प्रभावित कर रहा है। वायु प्रदूषण के कारण सांस लेना कठिन होता जा रहा है और अनेक बीमारियां बढ़ रही हैं। जल प्रदूषण के कारण नदियां, तालाब और भूजल दूषित हो रहे हैं। ध्वनि प्रदूषण हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर असर डाल रहा है। मिट्टी प्रदूषण के कारण कृषि और खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। इसके साथ ही प्लास्टिक प्रदूषण, औद्योगिक प्रदूषण और बढ़ता कचरा भी प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ रहे हैं। इन सभी समस्याओं के लिए केवल किसी एक व्यक्ति या संस्था को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता, बल्कि हमें अपनी भूमिका भी समझनी होगी।

पर्यावरण की सुरक्षा केवल किसी एक संस्था या सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हम सभी का सामूहिक दायित्व है। हमें स्वयं से यह पूछना चाहिए कि हमने अपने जीवन में कितने पेड़ लगाए हैं? हमने अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखने के लिए कितना प्रयास किया है? हम 02 अक्टूबर को स्वच्छता अभियान में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं क्योंकि यह एक सरकारी पहल होती है, लेकिन क्या हम अपने दैनिक जीवन में भी स्वच्छता को उतनी ही गंभीरता से अपनाते हैं? चलते-फिरते बस, कार या अन्य स्थानों पर हम कितनी आसानी से पॉलिथीन, टॉफी के रैपर और अन्य कचरा फेंक देते हैं। क्या हमें ऐसा करने के लिए किसी सरकार ने कहा है? यह विचार हमें स्वयं करना होगा। आज आवश्यकता है कि हम केवल आरोप-प्रत्यारोप में समय न गंवाकर अपनी भूमिका को पहचानें। प्रकृति हमें जीवन देती है, लेकिन यदि हम उसकी रक्षा नहीं करेंगे तो आने वाला समय हमारे लिए और अधिक कठिन हो सकता है। वह दिन भी आ सकता है जब हम अपनी अंतिम सांसें गिन रहे होंगे और यह सोचने पर मजबूर होंगे कि हमने आने वाली पीढ़ी को कैसा वातावरण दिया। विशेष रूप से शिक्षक होने के नाते हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। क्या हम अपने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक कर पा रहे हैं? क्या हम उन्हें प्रकृति के प्रति संवेदनशील बना पा रहे हैं? क्या हम अपने समाज को स्वच्छ और सुरक्षित भविष्य के लिए प्रेरित कर पा रहे हैं? यह केवल एक प्रश्न नहीं, बल्कि हम सभी के लिए आत्ममंथन का विषय है। आइए, जिम्मेदारी किसी और पर डालने के बजाय स्वयं से शुरुआत करें। एक पौधा लगाकर, एक कचरा सही स्थान पर डालकर और एक अच्छी आदत अपनाकर हम भी बदलाव का हिस्सा बन सकते हैं।

डॉ. वंदना सिंह ठाकुर
अधिष्ठाता, विशेष शिक्षा विभाग
यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, जयपुर